उत्तराखण्ड़ में कृषि का विविधिकरण एक आर्थिक सूक्ष्म विश्लेषण

डॉ0 महेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग
एस0जी0आर0आर0 पीजी कालिज, देहरादून
ईमेलः mkrajoor@gmail.com / drkumar1580@gmail.com

सारांश

कृषि विविधिकरण आर्थिक विकास के आवश्यक घटकों में से एक है। यह वह चरण है जहां पारंपरिक कृषि उत्पाद मिश्रण को उच्च मानक उत्पादों में स्थानांतरित करके पारंपरिक कृषि को एक गतिशील और वाणिज्यिक क्षेत्र में बदल दिया जाता है, जिसमें उत्पादन दर को उत्तेजित करने की उच्च क्षमता होती है। उत्तराखण्ड हिमालय एक पारंपरिक कृषि समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जहां 74 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या अपनी जीविका चलाने के लिए अनाज, फसलों की खेती पर निर्भर करती है। समय के साथ–साथ, मानव जनसंख्या में वृद्वि और प्रति व्यक्ति भूमि में कमी के साथ, पारंपरिक निर्वाह कृषि खाद्य आवश्यकता को पूरा नहीं कर सका है।

हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र साधारणतः अर्द्व विकसित है। इस क्षेत्र के आर्थिक कार्यक्रमों के फलस्वरूप कुछ प्रगति हुई है इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता परन्तु हिमालय क्षेत्र में परिस्थितियों की निम्न दशा का मुख्य कारण निर्धनता और बेरोजगारी है। यदि हिमालय क्षेत्र में परिस्थितिकी के अनुभव से देखा जाये तो यह मैदानों से जुडे एक बड़े क्षेत्र और चक्रीय पर्यावरण के लिये गम्भीर प्रतिघात है। क्षेत्र की विषम स्थलाकषति, विरल जनसंख्या अधिकतम पहुॅच से बाहर दूर–दूर तक फैले हुये छोटे–छोटे गांव, पथरीली भूमि और वर्षा से सिंचित सीमित क्षेत्र, कृषिकृत अर्थव्यवस्था पुरूषों का परदेश में बसना, महिलाओं का कृषि के प्रति जिम्मेदार होना आधुनिक उन्नति आदानों के साथ न्यून सिंचाई निम्न उत्पादकता को बरकरार रखते हैं। यातायात व संचार सांधनों की कमी, उचित मार्केटिंग का क्रेडिट संगठन का अभाव आदि की अपनी विशेष समस्यायें हैं। तद्नुसार क्षेत्र और लोग तकनीकी रूप से पिछड़े और गरीब होते जा रहे हैं। राज्य में साधारणतः सिंचाई, सड़कें, बाजार, औद्योगिक वातावरण, संस्थात्मक विनत आदि अधः संरचनात्मक सुविधाओं की कमी है।

प्रस्तावना

हाल के वर्षों में कृषि का विविधीकरण एक रणनीति के रूप में नवीन वर्षों से देश में बनी योजनाओं को ध्यान में रखते हुये महत्वपूर्ण विकसित लक्ष्य प्राप्त कर चुका है। यह रणनीति आर्थिक पर्यावरण में बदलाव के कारण कृषि क्षेत्र के उत्पादन कार्यों को बदलने और बढती

बेरोजगारी और प्राकृतिक संसाधनों की निम्न अवस्था की चुनोतियों का सामना करने में सहायक सिद्व हो रही है। इस रणनीति का विस्तृत उद्देश्य कृषि और अन्य क्षेत्रों में रोजगार वृद्वि के द्वारा प्रति व्यक्ति आय को ऊपर उठाना है जिससे आर्थिक विकास की नींव को विस्तष्त और स्थायित्व प्रदान किया जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य

उत्तराखण्ड में कृषि के विविधीकरण का अध्ययन मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

1.उपयोग भूमि व्यय का संभावित प्रयोगात्मक मूल्य निरूपण और बढ़ती बेरोजगारी और बढ़ती हुई आय से जुडे बदलाव।

2.प्रभावित कृषि विविधिकरण और अधःसंरचनात्मक तथा संस्थात्मक, विविधता पर आधारित आर्थिक तथ्यों के प्रथकत्व के संमघात का अध्ययन।

3.कृषि और कृषि से जुडे कार्यो के प्रयोग का प्रत्येक जिले का विश्लेषण और विभिन्न कार्यों द्वारा आय और रोजगार को बढ़ाने के क्षेत्र का अध्ययन।

4.बढ़ती हुई कृषि विविधिकरण में अधःसंरचनात्मक, संस्थात्मक, और सामाजिक आर्थिक तथ्यों के महत्व का अध्ययन।

5.कृषि विविधिकरण की रणनीति के लिए बढ़ते हुए रोजगार, आय बढ़ोत्तरी और जीवन का सहारा देने वाले संसाधनों से प्राप्त लक्ष्यों के उद्देश्य।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

भारत के आर्थिक विकास में कृषि विविधिकरण की क्षेत्रीय विविधताओं हेतु अनेक अर्थशास्त्रिओं एवं शोधकर्ताओं ने अध्ययन किये, जिनमें कुछ प्रमुख अध्ययन निम्न हैं।

एल0 पी0 भारती और एल0 आर0 शर्मा (1990) ने पहाड़ी क्षेत्रों में आलेखित विकसित संभागों के लिए स्थानीय विकास योजना और एक सिद्वान्त की आवश्यकता, हिमाचल प्रदेश के अध्ययन पर आधारित तर्क द्वारा परीक्षण कर रहा है। प्रत्येक संभागों में गांव का एक समूह अध्ययन के लिए चुन गया है परिवार की एक सूची प्रत्येक समूह के लिए सम्भावनायें और 60 परिवारों का प्रतिरूप देवयोग से चयनित है, विभिन्न आकार समूहों जोत के आंकडे 1997–98 से सम्बन्धित हैं, जो व्यक्तिगत साक्षात्कार विधि द्वारा निर्माण अनुसूची को प्राप्त करते हैं।

शर्मा (2005) हिमाचल प्रदेश राज्य के लिए, अध्ययन ने पिछले तीन दशकों के दौरान राज्य में कृषि में काफी उच्च विकास दर का संकेत दिया और बागवानी क्षेत्र और फलों के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ प्रमुख था।

कलमाकर (2009) ने भारत में शहरीकरण और कृषि विकास के बीच संबंधों का विश्लेषण किया और पाया कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है क्योंकि रोजगार और आजीविका निर्माण में इसकी उच्च हिस्सेदारी रही है।

कन्नन और सुंदरम (2011) ने भारत में राष्ट्रीय स्तरों पर कृषि विकास में रूझान और

पैटर्न का अध्ययन किया। अध्ययन ने 1967–68 से 2007–2008 की अवधि के लिए आंकडों पर विचार किया और संकेत दिया कि देश में फसल के पैटर्न में समय के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

मिनेद्रा (2012) द्वारा किए गए अध्ययन ने भारत में छोटी जोत की भूमिकाओं और चुनौतियों की जांच की, इसमें कृषि के विकास, खेती के पैटर्न छोटे धारकों की भागीदारी, छोटे धारकों की उत्पादकता प्रदर्शन, मूल्य श्रृंखलाओं के साथ छोटे धारकों को बाजार से जोडने के प्रभाव, खाद्य सुरक्षा और रोजगार सृजन बढाने में छोटे धारकों की भूमिका जैसे कृषि के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया।

शोध प्रविधि

द्वितीयक समंक संकलन

- •विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख।
- •कृषि पर आधारित विभिन्न शोधकर्ताओं की रिपोर्ट।
- •कृषि पर आधारित पुस्तकें, समाचार पत्र, वेबासाइट आदि।
- •उत्तराखण्ड़ सरकार द्वारा प्रेषित वार्षिक प्रतिवेदन।

कृषि का विविधिकरण एक सूक्ष्म विश्लेषण

वर्तमान समय में एशिया में दक्षिण एवं मध्य पूर्व एशिया तथा उत्तरी अफ्रीकी नीति निर्माता कृषि के विकास हेतु कृषि विविधीकरण की ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। विगत दो दशकों में भारत के कुछ राज्यों जैसे – पंजाब हरियाणा में कृषि विविधिकरण को अपनाने के उपरान्त शुद्व राष्ट्रीय घरेलू उत्पाद में 4.00 से 4.50 की वृद्वि हुई है। यद्यपि अन्य राज्यों जैसे– बिहार, असम, जम्मू कश्मीर, तमिलनाडू, उडीसा और हिमांचल प्रदेश में जहां कृषि के विविधिकरण का निम्न दशा को अपनाया है वहॉ तुलनात्मक रूप से शुद्व राष्ट्रीय घरेलू उत्पाद में कमी को प्रदर्शित करते हैं।

देश में भौगोलिक दृष्टि से विभिन्नता के कारण मिट्टी, वर्षा, तापक्रम, सतही पानी की उपलब्धि की दृष्टि से अन्तर बहुत अधिक है इस कारण एक राज्य के कुछ जिलों के लिये उपर्युक्त कार्यक्रम, अन्य राज्य की दृष्टि से बिल्कुल अनउपयुक्त हो सकता है। वर्षा को ही लीजिये जहॉ बंगाल, असम, मेघालय आदि राज्यों में वर्षा थोडी है कुछ क्षेत्रों की जलरोध और भूमि की सतह पर क्षार एकत्रित हो जाने की समस्या है। परन्तु अनेक क्षेत्र ऐसे भी हैं जहॉ ऐसी समस्यायें नहीं हैं। सम्पूर्ण भारत में नाइट्रोजन की कमी है और फास्फेट पोटाश की तत्व समान नहीं हैं। प्रायः एक ही गांव में कम अधिक उपजाऊ भूमि देखने को मिलती है इतना ही नहीं विभिन्न राज्यों के उत्पादन सम्बन्ध अलग–अलग हैं। इसी प्रकार जोतों के आकार तथा उनके उपविभाजन व उपखण्डन की दृष्टि से भी क्षेत्रीय विविधता है।

इस प्रकार कृषि के विविधिकरण के लिये दिये हुए विविध क्षेत्रीय प्रकारों की रणनीति सारे देश के लिये उचित नहीं हो सकती। इसलिये राज्य के लिये एक विशेष रणनीति की

आवश्यकता है जो क्षेत्रीय विशेषताओं पर आधारित हो। भारतीय अवव्यिवस्था वर्ग और क्षेत्र पर आधारित है भारत को प्राथमिक मण्डलों के प्रकार के आधार पर पांच प्राथमिक या प्राकृतिक क्षेत्रों में बांटा गया है। (1) हिमालय और उसके संयुक्त पहाड (2) उत्तर का मैदान (3) प्रायदीप का पठार और पहाड (4) पर्वतीय मैदान (5)पश्चिमी तटीय मैदान

देश के हिमालय क्षेत्र के इन पांच मण्डलों में 21 प्रतिशत कुल भौगोलिक क्षेत्र और 9 प्रतिशत देश की कुल जनसंख्या स्थापित है। हिमालय क्षेत्र निम्न जीवन को सहारा देने वाली पद्वति और प्राकृतिक संसाधनों को जकडे हुये है। राज्य में जीविका वृति के अतिरिक्त मैदानी जनसंख्या का एक बडा भाग पर्वतीय संसाधनों पर निर्भर है। हिमालय की सभी प्रमुख नदियां बहुत तेज धारा से प्रवाहित होती है जिस कारण सभी मुख्य नदियां गहरी घाटियां बनाती हुई मैदानी क्षेत्रों में कृषि के लिये जीवन रेखा का कार्य करती है।

हिमालय क्षेत्र के बड़ते हुये महत्व के अनुसार असमान्य कठिनाईयों के लिये पहाड़ी क्षेत्र के विकास ने अलग अध्याय की व्यवस्था की है। जिसे सातवीं पंचवर्षीय योजना में आर्थिक पूर्वावस्था की प्रगति आर्थिक विकास और आर्थिक सुरक्षा के साथ लागू किया है। आठवीं पंचवर्षीय योजना में पहाडी क्षेत्र के विकास के उद्देश्यों को दोहराया गया है जहॉ सामाजिक आर्थिक विकास और परिस्थितिकी विकास के साथ लोग रह रहे हैं।

भारत में लगभग 13 पहाडी राज्य हैं जिसमें उत्तराखण्ड अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति तथा विशेष समस्याओं के कारण आर्थिक एवं औद्योगिक दृष्टि से यह राज्य देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक पिछडा हुआ है। इस क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि जीविका का एक मात्र साधन होने के कारण निर्धनता की स्थिति है। कृषि उत्पादन की दृष्टि से भूमि मानसून पर निर्भर है। देहरादून तराई, भावर को छोड़कर सिंचित क्षेत्र नगण्य ही समझना चाहिये। यह भूमि ढालू तथा सीढ़ीदार होने के कारण लागत अधिक तथा लाभदायक कम है, कृषि भूमि की उत्पादकता कम है। अतः उत्तराखण्ड की कृषि भूमि यहां के निवासियों को भर पेट भोजन देने में असमर्थ है।

उत्तराखण्ड की भौगोलिक एवं प्रशासनिक सीमा के अन्तर्गत गढ़वाल तथा कुमायु मण्डल है। गढ़वाल मण्डल के अन्तर्गत 7 जिले यथा– देहरादून, टिहरी गढ़वाल, पौडी गढ़वाल, चमोली, उत्तरकाशी, रूद्रप्रयाग, हरिद्वार तथा कुमायूं मण्डल के अर्न्तगत 6 जिले यथा– नैनीताल, अल्मोडा, पिथोरागढ़, बागेश्वर, चम्पावत उद्यमसिंह नगर सम्मिलित हैं। उत्तराखण्ड हिमालय के केन्द्रीय सम्भाग में स्थित है। पहाड़ के तलहटी में उद्यमसिंह नगर तथा देहरादून के तराई व भावर क्षेत्र हैं। हिमालय से लगा सीमान्त क्षेत्र अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति तथा विभिन्न भौगोलिक समस्याओं के कारण मैदानी क्षेत्रों से सर्वथा भिन्न है।

उत्तराखण्ड हिमालय 28′43′ उत्तरी अक्षांश से 31′27′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 77′34′ पूर्वी देशान्तर से 81′02′ देशानतर के मध्य स्थित है। उत्तराखण्ड की उत्तरी सीमा भारत के तिब्बत से लगी हुयी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा है। पूर्व में काली शारदा नदियां इसे नेपाल से पृथक करती हैं तथा पश्चिम में टौंस तथा यमुना नदी हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखण्ड की सीमा रेखा है।

उत्तराखण्ड का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 53483 वर्ग कि0मी0 है जो उत्तर प्रदेश के क्षेत्रफल का 17.4 प्रतिशत है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र की जनसंख्या 100.86 लाख है, जिसमें 30.50 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय तथा 70.37 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है। उत्तराखण्ड़ में जनसंख्या का घनत्व 189 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 है। क्षेत्र में लिंगानुपात के अन्तर्गत 1000 पुरूषों के अनुपात में 963 महिलायें हैं, तथा साक्षरता दर 78.80 प्रतिशत है जिसमें पुरूषों की साक्षरता दर 87.40 प्रतिशत है जबकि महिलाओं की साक्षरता दर 70.0 प्रतिशत है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या में कर्मकारों का प्रतिशत 38.72 है तथा 61.28 प्रतिशत अकर्मकर है। कुल कर्मकारों में 28.71 प्रतिशत कृषक, 2. 47 प्रतिशत कृषि श्रमिक, 0.77 प्रतिशत घरेलू उद्योगों में कार्यरत तथा शेष 15.01 प्रतिशत अन्य सेवाओं में कार्यरत हैं। 1991 के अनुसार कृषि क्षेत्र में महिला कर्मकारों का प्रतिशत 89 है जो पुरूष कर्मकारों के प्रतिशत 42 के दुगने से भी अधिक है।

उत्तराखण्ड हिमालय में वन सम्पदा पर्याप्त मात्रा में है। इस क्षेत्र में वनों का कुल क्षेत्रफल 34355.15 हैक्टेयर है जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 65 प्रतिशत है। यहां के अधिकांश वन सदाबहार हैं। जिनमें चीड़, देवदार इत्यादि बहुमूल्य इमारती लकडियों के वृक्ष भी हैं। प्रदेश में वन सम्पदा का उचित विदोहन नहीं हो पाया है, जिसका प्रमुख कारण क्षेत्र का पहाड़ी होना व यातायात की समस्या होना है। उत्तराखण्ड हिमालय में खनिज पदार्थो की भी बहुलता है। इस क्षेत्र में कुमायुं मण्डल के अन्तर्गत नैनीताल व अल्मोडा जिले तथा गढ़वाल मण्डल के अन्तर्गत चमोली व पौड़ी जिले में तांबा पाया जाता है। इसके अलावा गढ़वाल मण्डल के देहरादून व पौडी जिले में चूना पत्थर और टिहरी तथा देहरादून जिले में डोलोमाइट पाया जाता है।

उत्तराखण्ड हिमालय के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यहां की लगभग 92 प्रतिशत जनसंख्या आजीविका हेतु कृषि पर ही निर्भर है। कृषि फसलों में गेहूँ, धान, मक्का, जौ, मॅडुआ, झंगोरा, सोयावीन, चना, मटर, सरसों आदि है। उत्तराखण्ड का कुल क्षेत्रफल 53.69 लाख है, जिसमें केवल 6.67 लाख हैक्टेयर भूमि ही कृषि कार्यों के लिये प्रयुक्त की जाती है। क्षेत्र में कृषि उत्पादन बिल्कुल ही न्यून है। यहॉ के लोगो का अधिकतम 4–6 माह का ही जीवन यापन हो सकता है। शेष समय में आजीविका हेतु यहां के निवासियों को अन्य व्यवसायों पर निर्भर होना, कृषि करने की परम्परागत तकनीकी, सीढीनुमा तथा विखरे खेत, भूमि की न्यून उर्वराशक्ति, खाद्यान्न फसलों की प्रमुखता, श्रम प्रधानता तथा अधिकांश जनसंख्या की आजीविका का साधन, यहॉ की कृषि की मुख्य विशेषतायें हैं।

देश के दूसरे राज्यों के समान कृषि क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य में भी रोजगार का एक बड़ा साधन रहा है। इस क्षेत्र में राज्य की 69 प्रतिशत जनसंख्या कार्यरत है। औद्योगिकीकरण की निम्न दशा होने के कारण व्यापार और वाणिज्य क्षेत्र में रोजगार को कृषि क्षेत्र के बाद दूसरा महत्वपूर्ण साधन माना है। यह देखा गया है कि देश में राज्य की जनसंख्या का एक बड़ा अंश सरकारी रोजगार में कार्यरत है। इससे राज्य वित्त पहले से ही इतना तना हुआ है कि रोजगार

व्यक्ति को वेतन देने में अधिक से अधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि राज्य में सरकारी नौकरियों के उचित अवसर नहीं हैं। इसके पश्चात दूसरे क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों का निर्माण करना है।

उत्तराखण्ड औद्योगिकीकरण के लौकिक प्रकारों के लिये क्षेत्र सीमित है। इस राज्य में प्रकृतिक संसाधनों का विदोहन असन्तुलित रहा है। इस क्षेत्र की वन सम्पदा का विदोहन ब्राहत स्थानों के उद्योगों को संरक्षण देने के लिये किया गया न कि इस क्षेत्र के औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहित तथा स्थापित करने के लिये वन सम्पदा का दोहन इतना अधिक असन्तुलित किया गया कि समस्त उत्तराखण्ड में भूक्षरण तथा भू–स्खलन की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। भूगर्भीय संसाधनों का सर्वेक्षण आर्थिक दृष्टि से उपलब्ध नहीं हैं। जन शक्ति का प्रयोग उद्योगों को चलाने के लिये विद्युत शक्ति के रूप में प्राप्ति नगण्य है, ऐसी स्थिति में अधिक आय, जीवन स्तर में वृद्वि, रोजगार की अधिक सुविधायें और आर्थिक विकास अवरूद्व हो गया है। दूसरी ओर प्रावधिक शिक्षा की कमी, पूँजी और साहसियों का नितान्त अभाव बाधायें उत्पन्न कर रहे हैं।

उत्तराखण्ड ने फल और बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में अधिक सफलता प्राप्त की है। इस राज्य में विभिन्न प्रकार के फल उगाये जाते हैं, जिसमें सेब की फसल प्रमुख है। अधिकतर 55530 हैक्टेयर क्षेत्र सेब के उत्पादन में लगा हुआ है। राज्य के कुल फल उत्पादन में सेब का अधिकतर 37 प्रतिशत भाग स्थापित है। यह वृद्वि प्रदेश में सौभाग्य का परिचय देती है। फिर भी सेब की वृद्वि अनुकूल जलवायु की आवश्यकता के कारण राज्य के परिमित क्षेत्रतक वस्तुतः सीमित रह गई है। राज्य के कृषि जलवायु क्षेत्र जो फल की उपज के लिये अच्छे हैं, किन्तु वहॉ मांग की बिन्दु का विचार नहीं आता। ये फल (जैसे– किटरस, आम, आलू बुखारा, और नाशपाती) को पहाड़ी क्षेत्र के मैदानी भागों में कोई भी तुलनात्मक उत्पादन लागत प्राप्त नहीं होती है। इस लिये मैदानी क्षेत्रों में उत्पादित वही फल बाजार के साथ स्पर्धा नहीं करते। यद्यपि राज्य के सभी जिलों में फल उत्पादन का एक निश्चित और सचेत प्रयास किया जा रहा है। इस प्रकार इस अनुसंधान के लिए एक प्रयत्न की आवश्यकता है कि भविष्य में राज्य के कृषि के विविधीकरण के लिये क्या बदलाव किये जायें। राज्य के कुल भागों में बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन के अर्थशास्त्र में नवीन कार्य किया है। उसके वृतान्त से पता चलता है कि बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में बदलाव से प्राप्त आय, उत्पादन और रोजगार में दूसरी फसलों और फलों की अपेक्षा काफी अच्छा रहा है। साधारणतः कुछ खोजकर्ता राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में आय और रोजगार को बढाने के लिये डेरी उद्योग में आकर्षित अवसर खोज रहे हैं।

राज्य के सभी जिलों में बेमौसमी सब्जियों को चयनित जगहों पर उगाया जा रहा है। सेब की तरह कृषि के विविधिकरण में बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन से आय को विशेष रूप से बढाया जा रहा है। राज्य में सेब और बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन की वृद्वि ने सफलता प्राप्त की है। ये प्राप्तियां पर्याप्त है परन्तु उनका विस्तार प्रभावशाली नहीं है। सांख्यिकी आंकडों पर आधारित भूमि का प्रयोग प्रदर्शित करता है कि राज्य में फलों की उन्नति में कृषिकृत क्षेत्र लगभग

6 प्रतिशत है और कुल फसल उत्पादन में सब्जियां लगभग 3 प्रतिशत क्षेत्र में उगाई जा रही हैं। 90 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र प्रोत्साहित नहीं है। कुछ क्षेत्रों में परम्परागत जीविका कृषि मुख्य रूप से अनाज में वृद्धि के प्रभुत्व पर आधारित है। इन क्षेत्रों में कृषि विविधीकरण का प्राकृतिक तकनीकी अधःसंस्थान और संस्थात्मक तथ्यों द्वारा किया है, जबकि राज्य में रणनीति के विकास के बदलाव में कई सुझाव दिये जा रहे हैं पहला क्षेत्रीय विशेषताओं को अपने ध्यान में रखना चाहिये, जिससे विभिन्न उपयोगी वस्तुओं से हो रहे उत्पादन से राज्य को तुलनात्मक लाभ या हानि को निश्चित किया जा सके। कृषि योग्य सीमित भूमि, खेती कठिन प्रक्रिया, जोतों का छोटा आकार, लहराता हुआ प्राकृतिक दृश्य, उपभोग केन्द्र से दूरी, उत्पादित हो रही ईकाई और लघु उद्योग उत्पादन का विखराव के कारण पहाडी क्षेत्र मैदानी क्षेत्रों से बिल्कुल भिन्न है। इन्ही कारणों से पहाड़ी क्षेत्रों में उद्यमी के फसलों के व्यापारिक उत्पादन की बराबरी मैदानी क्षेत्रों से नहीं की जा सकती। पहाड़ी क्षेत्र को साधारणतः बदली हुई प्राकृतिक दिशा की विविधता और भिन्नता वरदान के रूप में प्राप्त है जिसमें बहुत सी उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन में पर्वतीय क्षेत्र को फसलों के विविधिकरण और तुलनात्मक लाभ के लिये विभिन्न प्रकार के अवसर प्रदान किये गये हैं। कृषि के विकास से सम्बन्धित दूसरा बिन्दु है जो कम परिवहन लागत फसल और उत्पादन के ऊंचे मूल्यों में कम विस्तार का उदाहरण है। तीसरा पारिस्थितिकी आश्वासन के कारण घटती हुई तकनीकी को बढावा देना।

सम्पन्न संसाधनों, अधःसंस्थान सुविधायें और कृषि की जलवायु की दशा पर आधारित उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित कृषि क्षेत्र के लिये दो रास्ते हैं। पहला उन उत्पादित वस्तुओं के प्रेरित उत्पादन जिसमें राज्य के बाहरी क्षेत्रों में आकृर्षित बाजार कीमत के अवसर हैं। फल सब्जियां और बागवानी से प्राप्त उत्पादित वस्तुयें इसी श्रेणी में आती है। दूसरा उन उत्पादित वस्तुओं से प्रेरित उत्पादन जिसमें स्थानीय मांग की पर्याप्तता हो और जिनसे राज्य के बाहरी क्षेत्रों से आ रही पूर्ती स्थापन्न की जा सकती है। दूध इसका अच्छा उदाहरण है। इस अध्ययन से सिद्ध किया जा चुका है कि पृथ्वी पर पशुधन के भार को कम किया जा सकता है।

जलवायु की दशाओं का एक बड़ा भाग जो राज्य में अनुकूल जलवायु के अनुसार फसलों (जैसे– टमाटर, मटर, सोयाबीन, पत्तागोभी और शिमलामिर्च) को उगाता है जबकि मैदानी क्षेत्रों की जलवायु बिल्कुल भिन्न है इस प्रकार राज्य में बैमोसमी सब्जियों को उगाना और बाजार तक पहुंचाना जबकि ताजी सब्जियों की अत्यन्त कमी हो ताजी सब्जियों भारतीय उपभोक्ता के प्रतिष्ठा और दुर्लभता के कारण बैमोसमी सब्जियों को ऊंची कीमत पर बेचना, उत्पादन और परिवहन की ऊॅची लागत को छिपाता है। बहुत दूसरी वस्तुयें (जैसे– मशरूम, विदेशी सब्जियां – केशपोरगस, चिकरी, लेटमूस, ब्रोकोली) जो आयातों के लिये सम्भावित हैं और जो राज्य की प्राकृतिक दशाओं में उगाये जा सकते हैं।

प्रत्यक्ष रूप से प्रतीत होता है कि कृषि को विविधिकरण के लिये बढ़ती हुई आय और बढ़ते हुये प्रशासनिक रोजगार में उद्यन और तीव्रता के लिये अच्छा क्षेत्र होगा। राज्य में निश्चित खलाता को पहले से ही इस दिशा में ओर की ओर बढ़ना राज्य के दूसरे भागों में इन सफल

कहानियों को दोहराने के क्षेत्र से है। कृषि का विविधिकरण राज्य में कृषि से सम्बन्धित उद्योगों को आकृर्षित कर बाजार की पर्याप्तता को बढाता है।

राज्य में औद्योगिकीकरण के उत्पादन में जो सफलता प्राप्त की है वह संसाधनों से प्राप्त धन, तकनीकी, अधःसंस्थान, शोध विकसित उपजीविका सेवा वृद्धि के लिये अनुकूल दो पदार्थो की पारस्परिक क्रिया का परिणाम है। विविधिकरण से सम्बन्धित तथ्यों के अनुसार इसे तीन श्रेणीयों में बांटा गया है।

(1) प्राकृतिक तथ्य–वातावरणीय, भूमि सुधार ऊंचाई सम्बन्धी और प्राकृतिक दिशा के दृश्य के रूप में।

(2) अधःसंरचना – सड़क, ऊंचाई, बाजार, आदान पूर्ति प्रणाली संस्थात्मक कार्य

(3) आर्थिक तथ्य – कीमत और कीमत भिन्न में प्रलोभन, पूंजी साख, पूर्ति और उनकी तत्परता से सम्बन्धित कडी। जबकि प्राकृतिक तथ्य अधःसंरचना को दाव मीटर के रूप में प्रबन्ध करना और आर्थिक तथ्यों को विविधिकरण से रणनीति से प्राप्त इच्छित लक्ष्यों को योग्य बनाना।

उत्तराखण्ड का अनुभव सिद्ध करता है एक सफल विविध रणनीति का उद्देश्य केवल उत्पादन के आकार से सम्बन्धित नहीं होना चाहिये, बल्कि दूसरे आर्थिक तथ्यों और अधःसंरचना के विकास से भी सम्बन्धित नहीं होना चाहिए। विविधिकरण से उद्यमी या तीव्रता का ही विकास नहीं होता है बल्कि सारे क्षेत्र अधःसंरचना और संस्थापक क्षेत्र की आकृति पर आधारित है।

कृषि के घरेलू और अन्तरराष्ट्रीय मांग में आवश्यक बदलाव अपनी जगह ले रहे हैं। पशु उत्पादन आय में आजीविकि के स्तर के ढंग और प्रतिष्ठा में सुधार कर रहे हैं। व्यापार की स्वतन्त्रता और व्यापार का विकास और परिवहन अधःसंरचना नये और दूर बाजार के दृष्टिकोण को सिद्ध करता है। कृषि के विविधिकरण नये और लाभदायक अवसर का निर्माण करते हैं। विशेष रूप से उद्यम और उन्नत किसान उत्तराखण्ड राज्य की सरोवर है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. Bisht N.S. 1988 :*Uttarakhand Himalayan ki Arthvyawastha* ,Tehri: Bhagirathi Prakashan Girha.
2. Arora, R.C. 1997 : development of Agricultural and allied sectors, S. chand Publication new delhi.
3. Chand, Ramesh. 1999 :*Agriculture Diversification in India',* Mittal Publications, New Delhi.
4. Joshi, P.K., Birthal P.S., and Minto N., 2006 :*Source of Agricultural Growth in India: Role of Diversification towards High Value Crops'*International Food Policy Research Institute, Washington, D.C. 20006 U.S.A.

5. Joshi, P.K., Gulati A., Birthal P. S., and Tiwari L. 2004:*Agriculture Diversification in South Asia: Pattern*, Determinants and Policy Implications'. Economic and Political Weekly, June 12.

8. Arora APS, Srivastava SK. : *Diversification of Cropping Pattern and Food Grain Mix in India - Pace, Magnitude and Implications. I*ndian Journal of Agricultural Economics. 1996.

9. Bhalla GS, Singh G. *Growth of Indian agriculture: a district level study.* Planning Commission.GOI, 2010.

10. Chand KP, Singh R. *Diversification of agriculture in Himachal Pradesh: A Spatio temporal analysis*. Indian Journal of Agricultural Economics. 1985.

11. Joshi PK. *Crop Diversification in India: Nature, Pattern and Drivers*. National Centre for Agricultural Economics and Policy Research.New Delhi; 2005.

12. Mehta PK. *Diversification and Horticultural Crops: A Case of Himachal Pradesh.* Diss. Department of Economics, University of Mysore. 2009.

13. Shah SL. *Farming systems in hill areas*.Indian Journal of Agricultural Economics. 1979.

14. Sharma BR, Chand R. *Diversification of agriculture: an aid to employment generation in rural area.* Agricultural Situation in India. 1992.

15. *ESTIMATES OF STATE DOMESTIC PRODUCT OF UTTARAKHAND,* Directorate of Economics & Statistics of Uttarakhand Dehradun.

16. UTTARAKHAND AT A GLANCE, Directorate of Economics & Statistics of Uttarakhand Dehradun.

17 सांख्यिकी डायरी उत्तराखण्ड (विभिन्न अंक) अर्थ एवं सांख्या निदेशालय नियोजन विभाग, उत्तराखण्ड़ शासन देहरादून।

18 *कुरूक्षेत्र* : ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

19 *योजना* : सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

20 *उत्तराखण्ड में उद्योगों का विकास प्रगति समीक्षा,* उत्तराखण्ड़ शासन देहरादून।